Unit 3 : Curriculum, syllabus and text book

पाठचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक

Unit 3 : 1- Analysis of curricular aims and objective

पाठ्यक्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का विश्लेषण :

लक्ष्यों (Aims)	उद्देश्यों (Objectives)
– ये दीर्घकालीन होते हैं	– ये अल्प कालीन होते हैं
– इनका आधार दार्शनिक होता है	– इनका आधार मनोवैज्ञानिक होता है
– उद्देश्य एक सामान्य कथन होता है	–उद्देश्य एक विशिष्ट कथन होता है
– इसका क्षेत्र ब्यापक होता है	– क्षेत्र सीमित होता है
– यह सम्पूर्ण विद्यालय, कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र से संबंधित होता है	– यह विषय विशेष से संबंधित होता है
– इसमें आदर्शवादिता होती है	– इसमें ब्यवहारिकता होती है
– समय सीमा निश्चित नहीं होती है	– समय सीमा निश्चित होती है

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives of social science teaching) :

– ज्ञान प्राप्त करना

– तार्किक एवं जटिल महत्वपूण निर्णयन शक्ति का विकास

– स्वतंत्र अध्ययन में प्रशिक्षण

– आदत व कौशल निर्माण

– आचरण के ऐच्छिक/इच्छित प्रतिरुप में प्रशिक्षण

– ब्यक्तिगत मूल्यों का विकास

– सामाजिक मूल्यों का विकास
– संवैधानिक मूल्यों का विकास
– उत्तरदायी नागरिकों का विकास करना
– सांस्कृतिक संरक्षण, रुपांतरण एवं संप्रेषण
– राष्ट्रीय एकीकरण का विकास
– राष्ट्रभक्ति की भावना का विकास
– अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करना

उपसंहार –

मूल्यांकन –1. पाठ्यक्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को समझाते हुए सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्दश्यों पर प्रकाश डालिए।

Unit 3-2-Integrated social science curriculum vs Subject based curriculum (History, Geography, Social political life)

एकीकृत सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम बनाम विषय आधरित पाठ्यक्रम (इतिहास, भूगोल, सामाजिक राजनीतिक जीवन)

———————————————————————————————

इसके अंतर्गत 9वीं एवं 10 वीं के सामाजिक विज्ञान विषय में इतिहास, भूगोल एवं नागरिक शास्त्र विषयों के अंर्तगत सम्मिलित कोर्स का अध्ययन करना है जो इन कक्षाओं में पढ़ाए जाते है। एकीकृत पाठ्यक्रम के अंतर्गत विषय अध्ययन के साथ क्रियाओं को जोड़ दिया जाता है। जैसे – प्रोजेक्ट वर्क, भ्रमण, प्रायोगिक कार्य, ड्रामा, नाटक, विभिन्न प्रकार के संग्रह कार्य , चित्रकला, करके सीखें, ड्राइंग, पेंटिंग, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि। एकीकृत पाठ्यक्रम अर्थात सैद्धांतिक के साथ–साथ व्यवहारिक एवं प्रायोगिक शिक्षा ब्यवस्था को अपनाना।

जैसे – कक्षा 9वीं में सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत भूगोल विषय के पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु क्या – क्या।

कक्षा 10वीं में सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत भूगोल विषय के पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु क्या – क्या।

कक्षा 11वीं में भूगोल विषय के अंतर्गत भूगोल के पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु क्या – क्या।

कक्षा 12वीं में भूगोल विषय के अंतर्गत भूगोल के पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु क्या – क्या।

इसी तरह इतिहास, नागरिक शास्त्र/राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों में कक्षानुसार पाठ्यक्रम के स्तर में क्रमिक विकास एवं परिवर्तन होती चला जायेगा। इसे

एकीकृत पाठ्यक्रम कहते है। कक्षानुसार पाठ्यक्रम के स्तर में बृद्धि होते जाती है।

उपसंहार –

मूल्यांकन – 1. प्रश्न – एकीकृत सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम बनाम विषय आधारित (कोई एक विषय) हेतु एकीकृत पाठ्यक्रम को समझाइये।

प्रश्न3. उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास विषय आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम का उल्लेख कीजिए।

Unit 3-3-Comparative analysis of State and National Curriculum documents with a special focus on objectives

उद्देश्यों पर विशेष ध्यान देने के साथ राज्य और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम दस्तावेजों का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तर – आजकल राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पाठ्यक्रम लगभग एक सा हो गया है।

जब यह आज से 5 साल पहले जबकि दोनों (राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरी) सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम अलग–अलग था उस समय के लिए प्रासंगिक था। यह पाठ्क्रम बी.एड के लिए उस समय का बना है।

बी.एड. प्रशिक्षार्थी इसे दोनों स्तर की पाठ्यवस्तु के आधार पर जाँच कर लेवें और यदि अंतर मिलता है तो उसका तुलनात्मक अध्ययन लिखकर रखना है।

Unit 3-4-Connection between curriculum, syllabus and Text book

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तक के बीच संबंध

————————————————————————————

परिभाषा – '' पाठ्यचर्या में वे सभी परिस्थितियाँ सम्मिलित है जो स्कूल द्वारा विद्यार्थियों के ब्यक्तित्व के विकास तथा उनके ब्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने के लिए सावधानी पूर्वक आयोजित की जाती है।

पाठ्यक्रम का अर्थ (Meaningn of curriculum) – पाठ्यक्रम

————————————————————————————

शब्द की ब्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द क्यूररे (currere) से हुई है जिसका अर्थ है ''दौड़ का मैदान'' (Race-course) इस प्रकार पाठ्यक्रम दौड़ का वह मैदान है जिस पर छात्र लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।

शिक्षा के अंतर्गत वे सारे अनुभव जो अधिगम कर्ता को विद्यालय में उनके ब्यवहार तथा मानसिक समुच्चय में इच्छित परिवर्तन लाने के लिए प्रदान किए जाते है पाठय्क्रम कहलाते है। इसमें ज्ञान, कौशल, एवं मूल्य सभी कुछ शामिल है।

पाठ्यक्रम – प्रायः पाठ्यक्रम उन विषयों का समुच्चय होता है जो शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पढ़ाये जाते हैं किंतु यह धारणा संकुचित एवं सीमित है। इसके ब्यापक अर्थों में वे सभी अनुभव सम्मिलित किए जाते हैं, जिन्हें छात्र विद्यालय की विविध क्रियाओं से प्राप्त करते हैं। स्कूल का समूचा वातावरण इसमें सम्मिलित है। इतना ही नहीं विद्यालय के बाहर की वे

अर्थपूर्ण एवं वांछनीय क्रियाएँ तथा अनुभव भी सम्मिलित हैं जो विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सके। इसी ब्यापकता के कारण पाठ्यक्रम को पाठ्यचर्या कहते हैं। पाठ्यचर्या शिक्षा के समूचे वातावरण को ओर इंगित करती है।

परिभाषा – पी.टी.नन –'' हर प्रकार की वे क्रियाएँ जो कि मानव सोच की बड़ी अभिब्यक्ति होती है और इस विशाल संसार में सबसे बड़ी एवं सबसे अधिक स्थायी महत्व की होती है उन्हें पाठ्यक्रम समझा जाना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग – पाठ्यक्रम से तात्पर्य केवल वे एकेडमिक विषय नहीं होते जो कि विद्यालयों में परम्परागत ढंग से पढ़ाये जाते है बल्कि इसमें वे सारे अनुभव शामिल होते हैं जो कि छात्र सैकड़ों प्रकार की क्रियाओं के माध्यम से स्कूल में, कक्षा में, पुस्तकालय में, खेल के मैदान में या अध्यापक व शिष्य के बीच में विविध प्रकार के अनौपचारिक संपर्कों के माध्यम से प्राप्त करता है। इस प्रकार स्कूल का पूरा जीवन पाठ्यक्रम बन जाता है जो कि छात्र के जीवन के हर बिंदु को छूता हो और एक संतुलित ब्यक्तित्व के मूल्यांकन एवं विकास में उनकी सहायता करता हो।

पाठ्यक्रम की विशेषताएँ –

————————————————

1.अनुभव आधारित होता है –

2.अधिगम कर्ता के ब्यवहार में इच्छित परिवर्तन लाना –

3.अध्यापकों के द्वारा छात्रों की अभिवृत्ति को जानना –

4.शैक्षिक लक्ष्य एवं उद्देश्य पाप्त करने में सहायक –

5.स्थानीय आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुरुप –

पाठ्यक्रम के प्रकार :

————————————

1.विषय केन्द्रित – परम्परागत पाठ्यक्रम

2.क्रिया केन्द्रित – महात्मा गांधी, रुसो, जॉन डी.वी., फ्रोबेल, नई शिक्षा नीति 2020 आदि।

3.अनुभव कन्द्रित – वे अनुभव जो छात्रों कों विविध प्रकार के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति एवं प्रसंशा प्रदान करती है। अनुभव वास्तव में मानव को उसके सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के साथ अंतःक्रिया है जो छात्र को आसपास के वातावरण में समायाजित होने में सहायता करती है।

4.एकोकृत पाठ्यक्रम – इसके अंतर्गत विषयों एवं क्रियाओं का जोड़ दिया जाता ह जैसे–मीरा, तुलसी, सूरदास की रचनाओं को हम उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में पढ़ते है एवं आगे उच्च शिक्षा स्तर पर भी विस्तार से पढ़ते हैं। यह पाठ्यक्रम ब्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। 4 वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम भी इसका एक उदाहरण है।

5.संतुलित या कोर पाठ्यक्रम – विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम, उनकी उम्र, ब्यक्तिगत आवश्यकता, सामाजिक, देश, काल एवं विश्व में प्रतिस्पर्द्धा को ध्यान में रखते हुए क्रियान्वित होना चाहिए जिससे बालक ज्ञान, समझ एवं कौशल विकसित कर चिंतनशील एवं सृजनशील बनने में सक्षम हो सके। अज्ञात से ज्ञात की ओर एवं सामान्य से विशिष्ट की ओर प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर तक आत्म निर्भरता की योग्यता एवं क्षमता विकसित हो जाए।

पाठ्यक्रम निमाण के सिद्धांत :

————————————————

1.बाल–केन्द्रित –

2.समुदाय केन्द्रित –

3.एकीकरण का सिद्धांत –

4.वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत –

5.दूरदर्शिता का सिद्धांत –

6.लोच का सिद्धांत –

7.संगठन का सिद्धांत –

8.संतुलन का सिद्धांत –

9.क्रिया का सिद्धांत –

10.उपयोगिता का सिद्धांत –

पाठ्यक्रम का संबंध बालक के सम्पूर्ण विकास से होता है जिसके अंतर्गत ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि विकास को क्रयाओं का सम्मिलित किया जाता है। पाठ्यक्रम के अंदर पाठ्यवस्तु (Syllabus) को सम्मिलित किया जाता है। पाठ्यवस्तु से तात्पर्य होता है जैसे–सामाजिक विज्ञान शिक्षण विषय के लिए हाई स्कूल कक्षा के नागरिक, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र विषय में कितनी पाठ्यवस्तु अथवा प्रकरणों को पढ़ाकर परीक्षा के लिए तैयार करना है उसे कक्षा विशेष की पाठ्यवस्तु कहेंगे। पाठ्यवस्त, का संबंध ज्ञानात्मक (Cognitive) पक्ष से होता है।

विद्यालय के अंतर्गत शिक्षण क्रियाओं का संबंध ज्ञानात्मक पक्ष से होता है। खेलकूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण का संबंध शारीरिक विकास से होता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय पर्वों पर जिन कार्यक्रमों का नियोजन किया जाता है उनसे सामाजिक यवं सांस्कृतिक गुणों का विकास होता है। इसके अतिरिक्त स्काउटिंग एवं एन.सी.सी के आयोजन से नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय की सभी क्रियाओं को पाठ्यक्रम का अंग माना जाता है। पाठ्यक्रम का स्वरुप अधिक ब्यापक होता है जबकि पाठ्यवस्तु का

स्वरुप सुनिश्चित होता है जिसके अंतर्गत शिक्षण विषयों के प्रकरणों को ही सम्मिलित किया जाता है।

उपसंहार –

मूल्यांकन – प्रश्न1. पाठ्यक्रम से आप क्या समझते है?

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्त् के मध्य संबंधों का उल्लेख कीजिए।

Unit 3-5- Identifying good resources – criteria and Process

अच्छे संसाधनों (भौतिक एवं मानवीय) की पहचान करना – मानदंड और प्रक्रिया (यथार्थ चित्रण कला)

उत्तर – अलग–अलग विषय (नागरिक शास्त्र, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र) विषय के छात्राध्यापकों का समूह बनाकर विषय आधारित ज्ञान एवं कौशल विकास पाठ्यक्रम के अनुसार सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग शिक्षण कार्य में किया जाएगा। स्थानीय कलाओं, वस्तु संग्रह, स्थानीय एवं क्षेत्रीय भ्रमण, स्थानीय संस्कृति, भाषा, बोली, परम्पराओं आदि का प्रयोग कक्षा 6वीं से लेकर 10वीं तक के सामाजिक विज्ञान शिक्षण में पाठ्यक्रम आधारित सहायक शिक्षण सामग्री का समावेश करते हुए Learnin out comes को उद्देश्य पूर्ण एवं सफल बनाना है।

उपसंहार –

मूल्यांकन – प्रश्न1. सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम भूगोल विषय के अंतर्गत पाठ्यवस्तु ''छ.ग. के प्राकृतिक प्रदेश'' के शिक्षण हेतु भौतिक संसाधनों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न2. माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन विषय के अंर्तगत पाठ शिक्षण हेतु संसाधनों की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

धन्यवाद्